रुपए की मज़बूती के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष

चर्चा में क्यों?

- कुछ समय पहले डॉलर के मुकाबले रुपए का लगातार गरिना चतिति करने वाला था, लेकनि अब हालात कुछ अलग हैं। रुपया अब मज़बूत स्थति में है।
- आज रुपया मज़बूत है और इसके मज़बूत होने से जहाँ एक ओर भारत के नर्यात पर असर पड़ रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे भी पक्ष हैं जो इस स्थति के कारण लाभान्वति हो रहे हैं।

रुपए की मज़बूती से लाभान्वति कौन?

- गौरतलब है कि रुपए के लगातार मज़बूत बने रहने से अधकि लाभ उन्हें मलिता है, जन्होंने वदिशों से लोन ले रखा है। साथ ही इससे सरकार महँगाई पर भी काबू रख पाती है।
- मज़बूत रुपए से वदिश से कच्चा माल आयात कर भारत में उत्पादन करने वालों को भी फायदा होता है।
- शेयर बाज़ार की बात करें तो मज़बूत रुपए से बाज़ार फायदे में रहता है। इससे वदिशी नविश में वृद्धि की संभावना बनी रहती है।
- मज़बूत रुपया सरकार के लयि फायदेमंद है। कमज़ोर रुपए के मुकाबले रुपए के मज़बूत होने की स्थति में सरकार महँगाई पर काबू कर पाती है और राजकोषीय घाटे को भी अपने नयिंत्रण में कर पाती है।

रुपए की मज़बूती से प्रभावति कौन?

- दरअसल, रुपए के बहुत अधकि मज़बूत होने का संबंध मुद्रा के अधमूिल्यन (Overvaluation) से है। जब सरकार देश की मुद्रा की "इकाई वनिमिय-दर" को सामान्य दर (अर्थात् स्वतंत्र वदिशी वनिमिय बाज़ार में मांग तथा पूर्ति द्वारा नर्धारति होने वाली दर) से ऊँचा नर्धारति करती है तो यह अधमूिल्यन कहलाता है।
- अधमूिल्यन, अवमूल्यन की ठीक वपिरीत स्थति है। इसका प्रभाव यह होता है कि विदिशों से वस्तुएँ खरीदना सस्ता हो जाता है, जबकि विदिशी व्यापारयिों द्वारा इस देश की वस्तुएँ खरीदना महँगा हो जाता है।
- इस प्रकार मुद्रा का अधमूिल्यन आयात को प्रोत्साहति तथा नर्यात को हतोत्साहति करता है। स्वतंत्र वदिशी वनिमिय बाज़ार में कोई भी मुद्रा अधकि समय तक अधमूिल्यन की स्थति में नहीं रह सकती, परंतु वनिमिय नयिंत्रण द्वारा लंबे समय तक अधमूिल्यन की स्थति को बनाए रखा जा सकता है।
- रुपए का अधकि मज़बूत होना जहाँ एक ओर समस्यायों का कारण है, वहीं यदि महँगाई के आलोक में इसके प्रभावों का आकलन करें तो यह सकारात्मक तस्वीर पेश करता है। दरअसल, मज़बूत मुद्रा महँगाई के लयि एक सकारात्मक पक्ष है, क्योंकि यह आयात को सस्ता कर देती है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/positives-and-negatives-of-strong-rupee